ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 93-96
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

महाभारत में वर्णित राम का स्वरूप

1. सुमन रानी 2. प्रो. मन्जुनाथ एन. अंबिग
1. शोध अध्येत्री, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास (तमिलनाडु), भारत
2. विभागाध्यक्ष – हिन्दी विभाग, एणाकुलम (केरल), भारत

Received-06.03.2020, Revised- 12.03.2020, Accepted - 17.03.2020 E-mail: sumanbhati808@gmail.com

सारांश : *'रामायण' अत्यंत प्रोज्ज्वल संस्कृत भाषा में प्रणीत काव्य की गरिमामय, ऊर्जा से समन्वित एक सुसंगठित महाकाव्य है। जिसमें मानव–जीवन की सुसंस्कृत, सभ्य एवं मर्यादित झाँकी प्रस्तुत की गई है और संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि रामायण के पश्चात् 'महाभारत' का नाम आता है। 'महाभारत' की रामकथा में वाल्मीकि की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। महाभारत में रामकथा का चार स्थलों पर उल्लेख मिलता है जिसमें रामोपाख्यान सबसे विस्तृत और महत्वपूर्ण है। इस स्थल के अतिरिक्त रामकथा एवं उसके पात्रों का उल्लेख उपमादि के लिए लगभग पचास स्थलों पर और भी हुआ है। युद्ध संबंधी द्रोणपर्व रामकथा का चौदह बार और अन्य पर्वों–भीष्म कर्ण और शल्य पर्व में उसका पाँच बार उल्लेख हुआ है। इस पर्व में राम के अवतार होने का भी उल्लेख है। अर्थात वाल्मीकि कृत रामायण के संतुलन में महाभारत की रामकथा संक्षिप्त रूप में है। इसका कारण भी था, क्योंकि रामकथा (वाल्मीकि कृत रामायण की कथा) एक स्वतंत्र और विस्तृत रचना है। किंतु महाभारत में वर्णित रामकथा प्रसंगानुसार एक उदाहरण के रूप में वर्णित है, जिसका संक्षिप्त रूप होना सहज स्वाभाविक था। रामायण में महाभारत के किसी पात्र का उल्लेख नहीं है जबकि महाभारत में चार स्थलों पर रामायण कथा वर्णित है।[1] महाभारत के छठे अध्याय के 93वें श्लोक में उसके समय की अवधि और स्थिति अत्यंत स्पष्ट रूप से उल्लेखित है।[2] अ वेद और रामायण के बाद ही महाभारत काल महाभारत से प्रणेता को स्वीकार्य है।[3]*

कुंजीभूत शब्द– प्रोज्ज्वल, गरिमामय, समन्वित, सुसंगठित, सुसंस्कृत, मर्यादित, रामोपाख्यान, उपमादि, विस्तृत।

वेदे रामायणे पुण्ये भारते भारतवर्षम।
आणै चान्ते च माथे च हरिः सर्वत्र गीयते।।[3]

अतएव महाभारत में भी वाल्मीकि जी चित्रित नगर आते हैं। जिसका प्रभाव महाभारत के उस श्लोक से मिलता है, जिसमें कहा गया है कि वाल्मीकि ने गोविंद कृपा (महिमा) का उल्लेख किया है–

"असितो देवलस्तात वाल्मीकिश्च महातपाः।
मार्कण्डेयश्च गोविंदे कथत्यद भुतं महतः।।[4]

इससे स्पष्ट होता है कि वाल्मीकि रामकथा 'महाभारत' की रामकथा से प्राचीन है। महाभारतकार ने अनेक स्थलों पर वाल्मीकि का उल्लेख किया है। रामायण में किसी भी स्थल पर महाभारत का वर्णन नहीं मिलता है। वाल्मीकि रामायण के राम ईशावतार और विष्णु अवतार के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। 'महाभारत' में रामकथा का उल्लेख मिलता है। आरण्यक पर्व द्रोणपर्व, शान्तिपर्व तथा वनपर्व था (रामोपाख्यान) पर आरण्यक पर्व, द्रोणपर्व तथा शान्ति पर्व में रामकथा प्रसंगवश स्फुट रूप में उल्लेखित है। लेकिन वन पर्व (रामोपाख्यान) में रामकथा का क्रमिक एवं विशद रूप वर्णित है। महाभारत की रामकथा के पात्रों का उपमाओं के रूप में अनेक स्थलों पर प्रयोग हुआ है।5

आरण्यक पर्व में राम–कथा आरण्यक पर्व की रामकथा कदलीवन में हनुमान–भीम संवाद के रूप में ग्यारह श्लोकों में विद्यमान है। हनुमान भीम को राम वनवास, सीताहरण तथा राम का अयोध्या प्रत्यागमन की कथा संक्षेप में सुनते हैं। 'आरण्यक पर्व' में उल्लेख मिलता है। 'आरण्यक पर्व' की रामकथा अत्यंत संक्षिप्त है।

द्रोणपर्व तथा शान्ति पर्व में रामकथा –द्रोण पर्व तथा शान्ति पर्व की रामकथा प्रासंगिक कथा है। यहाँ प्रसंगवश इनका उल्लेख हुआ है। इन पर्वों की रामकथा में महाभारतकार का उद्देश्य राम–राज्य अर्थात् राम महिमा का वर्णन करना है, राम के साथ घटित घटनाओं का उल्लेख करना नहीं है। राम राज्य में सुख–समृद्धि, दुखों का अभाव, राम के श्रेष्ठ गुणगान का उल्लेख मिलता है। राम के 11000 वर्ष तक राज्य करने तथा बैकुंठ गमन की स्थितियों का वर्णन किया गया है। 'द्रोण पर्व' तथा 'शान्ति पर्व' की कथा 'षोडष राजोपाख्यान' के अंतर्गत आती है। पुत्र की मृत्यु से शोकातुर धृतराष्ट्र को नारद सोलह राजाओं का आख्यान सुनाकर धैर्य बँधाते हैं कि ये सभी राजा समर्थ होते हुए भी अंत में काल के वशीभूत हुए जिनमें राम प्रमुख है। नारद राम की घटनाओं का वर्णन 'अयोध्याकाण्ड' में 'युद्धकाण्ड' तक संक्षिप्त रूप में सुनाते हैं। 'द्रोणपर्व' के अंतर्गत अभिमन्यु वध से दुखी युधिष्ठिर को सांत्वना देते हुए व्यास जी सोलह राजाओं की कथा सुनाते हैं, जिनमें राम एक प्रमुख राजा है। इस रामकथा में भी 'बालकाण्ड' और 'उत्तरकाण्ड' की कथा का वर्णन नहीं मिलता है। 'द्रोणपर्व' में राम की महत्ता सिद्ध होते हुए भी रामावतार का उल्लेख नहीं मिलता है।

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

'शान्तिपर्व' में भी 'द्रोणपर्व' के समान ही रामकथा के प्रसंग मिलते हैं, लेकिन अंतर यह है कि 'द्रोणपर्व' में आख्यान सुनाने वाले व्यास हैं जबकि 'शान्तिपर्व' में रामकथ्ज्ञा काा संक्षिप्त रूप मिलता है। शान्तिपर्व में रामराज्य तथा राम की महिमा का वर्णन अधिक मिलता है और राम के 14 वर्ष तक वनवास का उल्लेख भी मिलता है। कवि का उद्देश्य राम के उत्कृष्ट गुणों से समाज में आदर्श स्थापित करना रहा है। यहाँ राम के अश्वमेध यज्ञ तथा 10,000 वर्ष तक राज्य करने का उल्लेख मिलता है–

'दशाश्वमेधा जारूध्यानजहार निर्गलाण्।[6]
दशवासिहस्राणि् दशवर्षशतानि च।
अयोध्याधिपतिर्भूत्वा रामो राज्यकारयत्।।[7]

शक्तिपर्व में शम्बूक वध का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

"श्रूयते शम्बुके शूद्रे हते ब्राह्मणदायकः।
जीवतो धर्ममासघ रामात्सत्यपराक्रमात्।।"[8]

रामकथा में 'वन पर्व' का क्रमिक उल्लेख मिलता है। रामोपाख्यान में रामकथा 'बालकाण्ड' से 'उत्तरकाण्ड' तक वाल्मीकि रामायण से कुछ परिवर्तित रूप में मिलती है। जिस संदर्भ में कथाकथन किया गया है, उससे स्पष्ट है कि महाभारत प्रणेता का उद्देश्य द्रौपदीहरण से शोकाप्लुत युधिष्ठिर के समक्ष एक समानधर्मी पात्र उद्धृत करना था, जिससे कुछ उन्हें सांत्वना मिल सके। जयद्रथ को पांडवों द्वारा दंडित किया जाता है, लेकिन युधिष्ठिर का मन खिन्न रहता है। समयानुकूल मार्कण्डेय मुनि आकर युधिष्ठिर को रावण द्वारा सीता हरण का उदाहरण देकर सांत्वना देते हैं। युधिष्ठिर की जिज्ञासा को देखकर मार्कण्डेय मुनि सम्पूर्ण रामकथा सुनाते हैं। मार्कण्डेय मुनि अपनी रुचि के अनुसार ही रामकथा के प्रसंगों का वर्णन करते हैं, जिससे अनेक प्रसंग इस आख्यान में नहीं आ सके हैं। मार्कण्डेय मुनि कथ्ज्ञा के आरंभ में कहते हैं, हे धर्मराज! श्रीराम को भी बड़े दुःख झेलने पड़े थे। द्रोपदी को जिस प्रकार जयद्रथ उठाकर ले गया, उसी प्रकार राम की पत्नी को भी महाबली रावण, संन्यासी की छद्मवेश धारण करके, बलपूर्वक उठा ले गया था। धैर्यवान राम ने वानरराज सुग्रीव की सहायता से समुद्र पर सेतु बंधन किया तथा अपने तीक्ष्ण बाणों से राक्षसों सहित लंकेश रावण का वध करके अपनी पत्नी सीता को प्राप्त किया। इससे स्पष्ट हो जाता है कि कवि का उद्देश्य एक संक्षिप्त तथा सपाट रामकथा सुनाकर युधिष्ठिर के धैर्य को जागृत करना था।

'रामोपाख्यान' में रामादि भाष्यों के जीवन चरित्र का उल्लेख मिलता है। इसमें पुत्रेष्टि यज्ञ तथा सीता स्वयंवर का वर्णन नहीं है। 'रामोपाख्यान' में सीता जनक की पुत्री है। सीता की जन्मकथा स्पष्ट है इसमें कोइ कुतूहल नहीं है। यहाँ चारों भाइयों की शिक्षा तथा विवाह का उल्लेख मिलता है। सीता के अलावा माण्डवी, श्रुतिकीर्ति आदि बहनों का उल्लेख नहीं है। कैकेयी के एक वर का उल्लेख मिलता है। मंथरा को गंधर्व दुंदभी का अवतार माना गया है।

राम–सुग्रीव मित्रता में राम के बल की परीक्षा का कोई उल्लेख नहीं है। बालि–सुग्रीव के एक द्वन्द्वयुद्ध का उल्लेख मिलता है। सीतान्वेषण में हनुमानादि की यात्रा का वर्णन न होकर सीधे हनुमान का प्रत्यागमन दर्शाया गया है, जिसमें हनुमान, सीता का सारा वृतांत राम को सुनाते हैं। त्रिजटा सीता को अविंध्य की सूचना देकर धैर्य बँधाती हुई कहती है कि राम, सुग्रीव के साथ विशाल वानर सेना लेकर शीघ्र आने वाले हैं। 'रामोपाख्यान' में रावण की सभा, राम का मायामय सिरादि सामग्री का अभाव है। सेतु बंध प्रसंग में समुद्र राम को स्वप्न में सहायता की प्रतिज्ञा करता है। यहाँ कुंभकर्ण का वध लक्ष्मण द्वारा होता है। इन्द्रजीत के दोनों यज्ञों का वर्णन नहीं मिलता है। संजीवनी बूटी हेतु हनुमान को द्रोणगिरि नहीं जाना पड़ता है, वह सुग्रीव के पास पहले से ही मौजूद है। विभीषण, राम को कुबेर का भेजा हुआ जल देते हैं, जिससे राम मुँह धोकर अदृश्य व्यक्ति को भी देख सकते हैं। यहाँ लक्ष्मण शक्ति का उल्लेख नहीं है। राम ब्रह्मास्त्र से रावण की ऐसी मृत्यु करते हैं कि उसकी राख भी नहीं बचती है। सीता की अग्नि परीक्षा नहीं होती है बल्कि स्वयं अग्नि, वायु, वरुण और ब्रह्माजी आकर सीता की साक्षी देते हैं। यहाँ विश्रवा की तीन पत्नियाँ हैं, जिनमें रावण तथा कुंभकर्ण की माता का नाम 'पुष्पोतकटा' है, विभीषण की माता का नाम 'मालिनी' है तथा खर और शूपर्णखा की माता का नाम 'राका' है, जबकि रामायण में सुमाली पुत्री 'केकानी' रावणादि की माता है।

अर्थात, महाभारत की रामकथा वाल्मीकि रामकथा से यत्किंचित परिवर्तनों के साथ उल्लिखित है। 'महाभारत' की रामकथा का रूप इतिवृत्तात्मक है। रामकथा के पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण जैसा 'रामायण' में मिलता है वैसा 'महाभारत' में नहीं। राम के विष्णु अवतार लेने का उल्लेख मिलता है। 'महाभारत' काल में ब्रह्मा को विष्णु से श्रेष्ठ माना जाता था, तभी तो 'रामोपाख्यान' में ब्रह्माजी देवताओं को बताते हैं कि मेरे आदेशानुसार विष्णु रामरूप में अवतार लेकर रावण का नामशेष करेंगे। यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि महाभारतकार रामायण से पूर्णरूपेण परिचित था, लेकिन अपनी रुचि और प्रसंगानुसार रामकथा का वर्णन किया है, दोनों महाकाव्यों में विवेच्य 'हनुमान' एक प्रमुख पात्र के रूप में अपने अनुपम गुणों सहित राम के

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

सेवक के रूप में मौजूद है। 'महाभारत' में तो वे कथा व्यास के रूप में उपस्थित है। जब भीम को रामकथा सुनाते हैं। महाभारत की कथा में कवि की दृष्टि न तो 'राम स्वरूप' के अंकन पर केंद्रित रही है और न ही रामकथा की मौलिक उद्भावनाओं पर रही। वस्तुतः रामोपाख्यान वाल्मीकि रामायण का एक प्रचलित लौकिक संस्करण दिखाई देता है। इसी कारण कुछ विद्वान रामोपाख्यान को वाल्मीकि रामायण से पृथक अन्य रामचरित्र पर आधारित मानते हैं।[9]

रामोपाख्यान के राम का स्वरूप वाल्मीकि रामायण में सर्वस्व रूप में उल्लिखित है। रामोपाख्यान में राम कथा के प्रसंग मिलते हैं, कहीं–कहीं राम के स्वरूप का आंशिक रूप में चित्रण हुआ है।

सहज गुण स्वरूप राम – राम के सौंदर्य रूप का चित्रण करते हुए बताया है कि वेद और धनुर्वेद में निष्णात राम अपने भाइयों में श्रेष्ठ थे। आजानुभुज राम मस्त हाथी की तरह चलते थे। उनका वक्षस्थल कपाट के समान चौड़ा था। शरीर का वर्ण श्यामल था और बाल घुँघराले थे। वह अत्यंत शुभ लक्षणों से युक्त और अमित सौंदर्य से अभिमंडित थे।[10]

राम का उपार्जित गुण –राम इन्द्र के समान पराक्रमी और बृहस्पति के समान प्रखर–बुद्धि से दीप्त थे। समस्त धर्मतत्वों एवं विद्याओं के ज्ञाता राम जितेन्द्रिय थे। वह अपने गुणों से शत्रु के मन और दृष्टि को अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। दुष्टों का दमन और साधुओं की रक्षा को वे अपना कर्तव्य समझते थे। धैर्यवान होते हुए भी वह दुर्दमनीय थे।[11]

राम का संघर्ष, स्थिति और निर्णय –राम सत्यनिष्ठ थे। पिता के सत्य की रक्षा के लिए उन्होंने 'वनवास' जाना सहर्ष स्वीकार कर लिया। भरत का स्नेह तथा उनके द्वारा की गई प्रार्थनाएँ राम को सत्य से एक इंच भी डिगा नहीं सकी। जनस्थानवासी ऋषियों की क्रियाओं को निर्बाध रूप से सम्पन्न होने की सुविधा देने के लिए वह खरदूषण सहित समस्त राक्षसों का वध करते हैं। वह अत्यंत दयावान हैं। सीता–विरह से उद्विग्न होने पर भी लक्ष्मण की रक्षा के लिए 'कबंध' का वध करते हैं। राम युद्ध–कला में बेजोड़ थे। शुक्राचार्य के समान ही युद्ध–प्रक्रियाओं को अत्यंत सूक्ष्मरूप से जानने वाले रावण के लिए उन्होंने ब्राहस्पत्य व्यूह की रचना की। इन्द्र के वज्रसदृश घातक रावण के त्रिशूल को निष्फल करने के लिए राम बाह्मदण्ड के समान अमोघ ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करते हैं जिससे ससारथि रावण जलकर भस्म हो जाता है।[12]

व्यक्तिगत भावों से असंश्लिष्ट कर्तव्यपरायणता राम – राम ने कर्तव्य की विधि को आज्ञा मानकर जीवन जिया है। विधि श्रेय है–अतः इसकी प्राप्ति में प्रेम की बलि देनी होगी। युद्ध विजय के बाद सीता को पूर्ण रूप से रावण के चुंगल से मुक्त करके अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। अब सीता स्वतंत्र है–कहीं भी जाए। विधि के प्रतिकूल राम सीता को ग्रहण नहीं करेंगे। केवल ग्राम्य कामनाओं की तृप्ति के लिए वह विधि–प्रतिकूल आचरण नहीं करेंगे। किंतु ब्रह्म, अग्नि, वायु और स्वयं दशरथ ने जब सीता–पवित्रता की साक्षी देकर स्थिति को विधि के अनुकूल बनाया तब राम ने बिना किसी संदेह सीता को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

कुशल प्रशासक के रूप में राम –महाभारत के द्रोण पर्व और शान्ति पर्व में जहाँ राम के राज्याभिषेक के पश्चात उनका कुशल प्रशासक के रूप में चित्रण हुआ है, वहाँ वन पर्व के रामोपाख्यान में राम का पराक्रमी रूप ही अधिक उभर कर सामने आया है। साथ ही राम ने अपने सहयोगी वानरों तथा विभीषण आदि के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित की है। राम ने सबका यथायोग्य आदर–सत्कार किया तथा रत्नों की भेंट से संतुष्ट करके सभी वानरों और रीछों को विदा किया।[13]

महाभारतकार ने राज्याभिषेक के प्रसंग में राम का भरत और शत्रुघ्न से मिलाप दिखलाते हुए भी राम की उदारता का परिचय दिया है। अंत में राम ने प्रजा की भलाई के लिए देवर्षियों सहित गोमती के तट पर दस अश्वमेध यज्ञ किये और याचकों को मनोवांछित वस्तुएँ प्रदान की।

रामोपाख्यान में 'राम' केवल उदाहरण कथा के नायक रूप में – रामोपाख्यान के अंत में मार्कण्डेय जी पुनः युधिष्ठिर को सांत्वना देते हुए कहते हैं कि जब परम तेजस्वी, धर्मपरायण राम के इतने दुख सहे तो तुम्हें शोक करना उचित नहीं है।[14]

इस प्रकार रामोपाख्यान तो वस्तुतः प्रमुख कथा के कारण विशेष के लिए उद्धृत एक अवान्तर कथा है और राम एक अवान्तर कथा के नायक हैं।

निष्कर्ष – अतः राम वाल्मीकि रामायण में भी मानव है और रामोपाख्यान के राम भी मानव हैं। विष्णु अवतार से 'राम' सदैव सरल, संघर्षशील, समाज कल्याण, कर्तव्यों का पालन और विश्व–बंधुत्व के रूप में ही रहे। निराशाओं पर आशा का प्रतीक, मन की विडंबना को, हौसले की ज्योति से संभावना की रोशनी तक का सफर राम को मानव के रूप में वर्णित करता है। महाभारत के कवि का संप्रेषित नायक 'उपमान' रूप में व्यवहृत है अतः रामोपाख्यान का तो उपमेय वर्ण्य विषय युधिष्ठिर है। मनुष्य उपमेय का उपमान

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

मनुष्यता की परिधि को लाँघकर उपमेय का सादृश्य कैसे पा सकता है।अतः रामोपाख्यान के राम मानव हैं। कथाकार की दृष्टि महाकाव्य–प्रणेता की भाँति सूक्ष्म नहीं है। उसके राम में इसी कारण वह ओज और तेज दिखाई नहीं देता जिसके दर्शन पूरा संसार 'वाल्मीकि रामायण' में होते हैं। मानवीय गुणों का चरमोत्कर्ष जिसने 'राम' को राम बनाया रामोपाख्यान में उपलब्ध नहीं होता। कवि ने राम के सतही तथा लोक–प्रचलित रूप को ही प्रस्तुत किया है। वस्तुतः वाल्मीकि रामायण यदि समस्त शास्त्रीय मर्यादाओं से अभिमंडित तथा प्रतिभा के ओज से देदीप्यमान रचना है तो 'रामोपाख्यान' के राम वाल्मीकि रामायण के लौकिक संस्करण है।

महाभारत के चित्रित राम के व्यक्तित्व के, मार्कण्डेय मुनि द्वारा केवल उन्हीं प्रसंगों पर प्रकाश डाला गया है जो उनके वीरत्व को चित्रित करते हैं। शोकाकुल युधिष्ठिर का धैर्य धारण करवाने के लिए महाभारतकार ने राम को धीर, सहिष्णु और विषम परिस्थितियों से जूझने वाला वीर सिद्ध किया है, ताकि शोकाकुल युधिष्ठिर अभिमन्यु वध का दुःख भुला सके। साक्षात विष्णु के अवतार श्रीराम को भी भूलोक में मानव योनि ग्रहण करने के पश्चात् इतने दुःख और कष्ट झेलने पड़े, फिर भी वे विचलित नहीं हुए; चाहे वन गमन का आदेश मिला हो, दशरथ–मरण की सूचना मिली हो,सीता–हरण हुआ हो या फिर लक्ष्मण को शक्ति–बाण लगा हो। प्रत्येक विषम परिस्थिति में भी श्रीराम संयत और स्थिर बने रहते हैं। नियति उन्हें जैसे–जैसे खेल दिखाती है, वैसे–वैसे राम भी कठपुतली की भाँति अपना कार्य करने पर विवश हैं तथापि वे किसी एक प्रसंग में अपने विवेक, धैर्य,साहस और पराक्रम का त्याग नहीं करते। इस प्रकारमहाभारत का रामोपाख्यान राम धीरोदात्त नायकत्व रूप में व्यंजित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आरण्यक पर्व राम कथा – 3/47/28–38
द्रोण पर्व की कथा – षोडष रामोपाख्यान के अंतर्गत।
2. शान्ति पर्व की राम कथा – 12/29/46–55
3. स्वर्गारोहण पर्व, अध्याय–6, श्लोक–93
4. महाभारत–12, 200, 4
5. उद्धृत कामिल बुल्के, रामकथा, पृष्ठ–37, हिंदी परिषद् प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।
6. वही, रामकथा, पृ. 38
7. महाभारत, शांति पर्व, पृ. 49–50
8. वही, पृ. 12–149
9. ई. डब्ल्यू. हापकिंस दी ग्रेट इपिक्स ऑफ इंडिया, पृ. 63
10. महाभारत, रामोपाख्यान, 277 सर्ग, श्लोक 8 तथा 13–14
11. वही, श्लोक 15 से 20 तक।
12. वही, 290 सर्ग, श्लोक 20–27 तक।
13. महाभारत, वन पर्व, रामोपाख्यान अध्याय 291 सर्ग, श्लोक 55–56
14. वही, 292 सर्ग, श्लोक 1–2

*****